

## चरम तीर्थंकर महावीरस्वामी

भगवान् पार्श्वनाथ के निर्वाण के लगभग 250 वर्ष पश्चात् भारतीय समाज अनेक वर्णों, जातियों, मतों एवं सम्प्रदायों में विभक्त था। उस समय तीर्थंकर पार्श्वनाथ की श्रमण परम्परा भी छिन्न-भिन्न हो चुकी थी। भगवान् महावीर के जन्म से पूर्व नन्दन मुनि का जीव दसवें देवलोक के पुण्डरिक विमान से ऋषभदत्त ब्राह्मण एवं उनकी पत्नी देवानंदा ब्राह्मणी की कुक्षि में अवतरित हुआ। गर्भकाल के जब बयासी दिन हुए तब सौधर्म इन्द्र का सिंहासन कंपायमान होने लगा। उन्होंने अविधिज्ञान से जाना कि श्रमण भगवान् महावीर का जीव ऋषभदत्त ब्राह्मण की भार्या देवानंदा की कुक्षि में आ चुका है। आपने अंजलिबद्ध होकर 'नमुत्थुणं' के पाठ से स्तुति की। उन्होंने सोचा कि तीर्थंकर, चक्रवर्ती, बलदेव तथा वासुदेव तो केवल ज्ञात, क्षत्रिय, इक्ष्वाकु, हरिवंश जैसे राजकुल में ही उत्पन्न होते हैं। अतः तुरन्त हरिणगमैषी देव को बुलाया और देवानंदा ब्राह्मणी के गर्भ से प्रभु का संहरण करवाकर त्रिशलादेवी के गर्भ में स्थापित करवाया। त्रिशला माता ने चौदह दिव्य स्वप्नों को देखा। त्रिशला माता ने गर्भकाल पूर्ण होने पर चैत्र माह के शुक्ल पक्ष में त्रयोदशी के दिन हस्तोत्तरा नक्षत्र में चन्द्रयोग होने पर मध्यरात्रि के समय जब ग्रह उच्च स्थान पर थे, तब माता त्रिशला ने देवों के समान सुन्दर आरोग्य, रूपवान् और सौम्य पुत्र को जन्म दिया। उस समय संपूर्ण लोक प्रकाश से जगमगा उठा। प्रभु वर्धमान ने बाल्यकाल में एक सर्प रूपी देव को निहतरता से उठा कर फेंक दिया था और एक ही मुट्ठी मारकर अपने बल का परिचय दिया था और इसलिए देवों द्वारा उन्हें महावीर नाम से संबोधित कर जय-जयकार की गई।

युवा होने पर वर्धमान ने अपने माता-पिता के अति आग्रह पर कलिंग नरेश समरसेन की पुत्री यशोदा के साथ विवाह कर लिया। वर्धमान की एक पुत्री हुई जिसका नाम 'प्रियदर्शना' रखा गया। साधना काल में अनेक उपसर्गों का समता के साथ सामना किया। आपने पाँच महासंकल्प लिये थे -

1. जहाँ अपना रहना दूसरों को अच्छा न लगे, वहाँ नहीं रहूँगा।
2. हमेशा कायोत्सर्ग में रहूँगा।
3. प्रायः मौन धारण करके रहूँगा।
4. करपात्र में भोजन करूँगा।
5. गृहस्थ का अनुनय-विनय नहीं करूँगा।

साढ़े बारह वर्ष में अनेक उपसर्ग सहन करते हुए परमात्मा महावीर विहार करते ऋजुवालिका नदी के तट पर पधारे। यहाँ शाल वृक्ष के नीचे गोदुहासन में चौविहार छद्म के साथ गहरी समाधि में लीन हो गये। वैशाख सुदी दशमी के दिन प्रभु महावीर चार घाति कर्मों का शय कर सर्वज्ञ, सर्वदर्शी बन गए।

कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी को छद्म का उपवास कर प्रभु महावीर ने अपनी अंतिम देशना देना प्रारंभ किया। कार्तिक कृष्ण अमावस्या को संध्या के समय भगवान् महावीरस्वामी निर्वाण को प्राप्त हुए।



SCAN QR CODE